लोकमत निर्मित तंत्र में लोकराज की तलाश

डॉ0 उपासना

प्रचलित लोकतंत्र प्रतिनिधियों के बल पर चलता है। जयप्रकाश नारायण के लोकतंत्र में आधार प्रतिनिधि नहीं, स्वयं नागरिक हैं। जनता अपने–अपने पर अपनी सहकारशक्ति से अपने जीवन का नियमन और संचालन करे तो लोकतंत्र का असली स्वरूप प्रकट होगा। प्रचलित लोकतंत्र प्रतिनिधि तंत्र है और असमें लोकशाही से अधिक नेताशाही और अफसरशाही है। इनके स्थान पर जयप्रकाश नारायण लोकतंत्र में नागरिक की सत्ता स्थापित करना चाहते थे। गांधी–विनोबा से प्राप्त लोकतंत्र के विचार को प्रतिष्ठित करने के लिए जयप्रकाश नारायण ने संघर्ष किया। उसे लोकतंत्र के इतिहास में एक बुनियादी कदम माना जायेगा।

भारत के अंदर लोकतंत्र एवं लोकशक्ति को मजबूत करने तथा शांति–सौहार्द की स्थापना के लिए जयप्रकाश नारायण निरन्तर प्रयत्नशील रहे। जहाँ कहीं भी लोकतंत्र पर कुठाराघात या जनता के मौलिक अधिकार का दमन हुआ, जयप्रकाश ने उसके खिलाफ आवाज उठाई। उनका सम्पूर्ण जीवन ही आमजन के लिए संघर्ष में व्यतीत हुआ।